लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

अधिगम

✍ डॉ. नारायण चंद्र तालुकदार

पार्किंग स्टैंड पर स्कूटर को पार्क कर मैं ऑफिस में दाखिल हुआ । बेग तथा हैल्मेट को ड्रायर में रख हाथ-मुंह धोने बैसिन के पास गया । उसके बाद अपनी कुर्सी पर बैठ अमृत को आवाज दी-

-'अरे अमृत, चाय पिलाओ ।'

-'जी बड़ा बाबू, अभी लाता हूँ ।'

दो मिनिट के अंदर अमृत चाय विस्किट लेकर आया । अपने सहकर्मी अलंकार पाठक तथा निशा भट्टाचार्य से पूछा,

-'आप लोगों ने चाय पी?'

-'हाँ जी, हम दोनों ने पी ली हैं । आप पीजिए ।' - मिसेस भट्टाचार्य ने कहा ।

चाय पीने के बाद मैंने अमृत को पान लेने के लिए भेजा । मौका पाकर पाठक ने मुझसे कहा,

-'बड़ा बाबू, अमृत को मैंने दो महीने पहले एक हफ्ते के लिए तीन सौ रुपए उधार दिये थे । आज तक लौटाने का नाम नहीं ले रहा है ।'

-'अरे मुझसे भी एक महीने पहले पाँच सौ रुपए लिये थे, पर अभी तक लौटाया नहीं है बड़ा बाबू ! क्या करें ?' - मिसेस भट्टाचार्य ने कहा ।

'हो' कहकर मैं चुप हो गया । उन्हें कैसे बताऊँ कि तीन महीने पहले दस दिन के अंदर लौटाने का वादा करके पाँच सौ रुपए अमृत ने मुझसे भी लिये थे, पर अब तक वादा नहीं निभाया है ।

दो साल पहले वित्त विभाग के पियन पद से ट्रांसफ़र होकर अमृत शर्मा हमारे विभाग में आया था । उसी समय वित्त विभाग के दीनेश बरदलै तथा दो-एक अन्य मित्र ने कहा था कि अमृत से सावधान रहिए, वह पैसे के लेन-देन में ठीक नहीं है । - हाँ काम जानता है - परंतु किसी चीज को लाने के लिए अगर उसे सौ रुपए देंगे तो बाकी बचे रुपए लौटाता नहीं है ।

मेरी दृष्टि में अमृत मुजिब से अच्छा है, मुजिब झूठ बोलता रहता है । वह हमारे विभाग में ही पियन था । उधार मांगते समय वह बताता है कि उसकी माँ अथवा अब्बा सीरियस हालत में जी. एम. सी. में पड़ा है । उसकी आँखों में आँसू देख रुपए देने ही पड़ते हैं । अब्बा-अम्मा ने मुजिब को पैदा ही नहीं किया, बल्कि बारी-बारी से

सीरियस होकर भी मुजिब की अब तक सहायता कर ही रहे हैं। पर एकबार कौतूहलवश मैंने उसके सर्विस बुक को देखा तो पाया कि उसके माता-पिता का निधन उसके बचपन में ही हो गया था। जब मैंने उससे इसका जिक्र किया तो सर खुजलाकर भाग गया था।

अमृत शर्मा बहुमुखी प्रतिभा का धनी है। ऐसा कोई भी काम नहीं है, जो वह नहीं कर सकता। वह एक पेशेवर महाराज है, मछलियों के कुल मिलाकर 67 प्रकार की व्यंजन-प्रणाली का वह ज्ञाता है। इस फील्ड में उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है। अन्नप्राशन, विवाह, जन्मदिन तथा भोज आदि का वह स्पेशलिस्ट है। उसकी एक टीम भी है, जिसका सर्वाधिनायक वह खुद है। यही नहीं चतुर्थ-वर्ग कर्मचारी परिषद का भी वह उपाध्यक्ष है। आवश्यक होने पर वह यजमानी भी कर लेता है। उसके पिता स्व. गिरिश शर्मा विलायत (कुचबिहार) में था। अपने मोबाइल फोन से वह अपनी टीम को निर्देश देता रहता है, जैसे-

> -'मैं अभी ऑफिस में हूँ, ढाई बजे तक पहुँचने का प्रयास करूँगा, तू एक काम कर- आलु'मिडल साइज में काटकर रख दे, मछलियों को नमक तथा हलदी मिलाकर रख' ... आदि।

अमृत शर्मा की कोई बेटी नहीं है- चार बेटे हैं, जिनसे उसका बहुत लगाव है । बड़ा बेटा किसी कम्पनी में कार्यरत है, दूसरा चेन्नई में है। तीसरा और चौथा घर में ही हैं। एक महीने पहले बड़े बेटे प्रदीप ने अपनी प्रेमिका को साइकिल के केरियर में बैठाकर रातों-रात घर लेकर आया। अगले दिन ऑफिस आकर इसकी जानकारी देकर उसने कहा -

> -'बेटे ने अच्छा ही किया बड़ा बाबू। मियाँ-बीवी दोनों राजी, तो क्या करेगा काजी ! मंदिर में शादी उसीने की तो निभायेगा भी वही।'

उसकी बातें सुन कर हम बड़े खुश हुए। दो दिन बाद उसने पार्टी का न्योता भी दिया। पार्टी के दिन संध्या के समय मैं अलंकार पाठक के साथ हेंगेराबारी स्थित घर पहुँचा, जहाँ पार्टी का आयोजन किया गया था। हम दोनों को देख अमृत बड़ा खुश हुआ। खाना खाने के बाद प्रदीप को उपहार तथा आशीर्वाद देकर हम लौट आए।

अमृत हेंगेराबारी में रहता है। ज्योतिनगर तथा बरबरी में भी उसकी जमीन हैं। इसका मतलब सरकारी फाइल को इधर-उधर कर के लोगों से पैसे लेने की बात सही है। इतना ही नहीं - वह जमीन की दलाली भी कर लेता है। पर इनके बावजूद वह लोगों से उधार क्यों मांगता है ? एकबार यह पूछने पर उसने सीधा-सा जवाब दिया था-

> -'क्या करूँ बड़ा बाबू ! चार बेटों को जन्म दिया है। खर्चा बहुत है, मिला ही नहीं पाते। इसीलिए...'

कुछ दिन बीत गए - मैं ऑफिस में ही बैठा था। लगभग 11:00 बज रहे थे। इसी समय एक

बुजुर्ग व्यक्ति मेरे केबिन में दाखिल हुआ। उनकी उम्र का लिहाज कर मैंने उन्हें बैठने के लिए कहा।

-'सुपरिंटेंडेंट बाबू ! आपके पास एक शिकायत लेकर आया हूँ, पिछले दो महीने से मेरा फाइल आपके विभाग के चार-पाँच टेबिल में बारी-बारी से चक्कर लगा रहा था। अब सुनने को आया है कि वह अब डेपुटी के पास है। आपके पियन अमृत शर्मा ने उस फाइल के लिए फिर दो सौ रुपए मांगे हैं। उसे इसी फाइल के लिए दो बार तथा डीलिंग एसिस्टेंट को भी एकबार पाँच सौ रुपये दे चुका हूँ। आप शर्मा को कंट्रोल नहीं कर सकते ?'

मैं क्या जवाब दूँ ! क्रोध से तिलमिलाकर मैंने अमृत को बुला लिया। बुजुर्ग को देखते ही वह सब कुछ समझ गया। निर्लज्ज की तरह सर खुजलाते हुए उसने कहा,

-'बड़ा बाबू, फाइल अभी लाता हूँ।'

दरअसल में डेपुटी साइन कर चुके थे। जो भी हो - उस बुजुर्ग व्यक्ति का काम उसी दिन हो गया।

उस रात खाने-पीने के बाद बरामदे में बैठ अमृत शर्मा के बारे में ही मैं सोच रहा था। एकबार अमृत ने मुजिब से कहा था –

-'मुजिब, तू ही बता घूस कौन नहीं खाता? हमारे भगवान तो घूस खाते ही हैं - शायद अल्लाह भी घूस के बिना कुछ नहीं करते !'

अब मुझे लगने लगा है - अमृत शायद ठीक ही कह रहा था। प्रसाद, पशुबलि, मिठाई, लड्डू के बिना भगवान को खुश नहीं किया जा सकता, वे वरदान नहीं देते। पुलिस का ड्राइवर तथा काला-व्यापारी में जो रिश्ता है उसे कौन नहीं जानते। डॉक्टर तथा अध्यापक प्राइवेट प्रेक्टिस तथा ट्यूशन नहीं करते ? विधायक तथा मंत्री बनने के बाद पाँच साल के अंदर व्यक्ति अपार संपत्ति के मालिक बन कैसे जाते हैं ? इंजिनीयर ठेकेदार द्वारा निर्मित सरकारी आवास, पुल आदि छह महीने में गिर नहीं जाते ?

शायद इसीलिए अमृत ने मुजिब से कहा था-

-'मुजिब, हमारे बड़ा बाबू, ये सब नहीं देखते अथवा देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। वे सिर्फ मेरी छोटी- मोटी गलतियों को देख लेते हैं। गरीब हूँ न !

मुझे अमृत की बातें कभी-कभी सही लगने लगती हैं। ... पर तुरंत अपने-आप को संभाल लेता हूँ। मैं नयन ठाकुरीया हूँ। मेरा एक आदर्श है। मैं विचलित नहीं हो सकता। बचपन में पिता जी ने मुझे महापुरुष की इस वाणी से परिचित कराया था –

-'तुम पहले अपने आप को सुधार लो, तब जाके कह पाओगे कि इस दुनिया से एक बुरा आदमी चला गया।'

अगले रोज की बात है, मैं ऑफिस में व्यस्त था। अमृत शर्मा ने टेबिल पर एक दरखास्त रखा। मैंने देखा –

-'एक हफ्ते की छुट्टी चाहिए- भतीजी की शादी है। शादी रंगिया में होगी।'

मुझे क्रोध आया, भतीजी की शादी कराएगा, भोज-भात खिलाएगा - पर ऑफिस के लोगों से जो उधार लिया था, उसे चुकाने का नाम ही नहीं लेता। कहा -

-'एक हफ्ते की छुट्टी नहीं मिलेगी, तीन दिन की छुट्टी लो। एक दूसरे कागज पर लिखके लाओ। मैं 'फॉरवर्ड' कर दूँगा।'

संध्या के समय अमृत के घर जाने का निर्णय लिया। आज उससे कम से कम दो सौ रुपए की वसूली अवश्य करनी है। एक बार सोचा कि इस समय पैसा वसूल करना शायद ठीक नहीं होगा क्योंकि उसकी भतीजी की शादी है, मैं इतना संगदिल कैसे हो सकता हूँ ! - पर अगले ही क्षण अपने आप को समझाया कि मुझे सख्त होना ही पड़ेगा। मैंने स्कूटर को हेंगेराबारी के रास्ते आगे बढ़ा ही दिया। अमृत का घर पहाड़ की ढलान पर स्थित है। उसके घर के आधे हिस्से पर एक दुकान है। शायद अमृत ने ही यह हिस्सा किराए पर दे रखा है। दुकान के सामने ही स्कूटर को पार्क किया- सोचा, पहले दुकान के पास जो स्टूल है, वहीं बैठकर एक सिगरेट पीऊँगा तथा एक तांबूल चबाऊंगा - तभी तो मुड बनेगा और पैसे की बात कर पाऊँगा। सिगरेट को जलाकर स्टूल पर बैठा ही था- उसी समय संलग्न कमरे से किसी की बातचीत की आवाज सुनाई दी। अरे ! यह तो अमृत की आवाज है, शायद वह अपनी पत्नी से कुछ कह रहा है। मेरा ध्यान आकर्षित हुआ।

-'अजी सुनती हो ! बड़ा बाबू ने सिर्फ तीन दिन की छुट्टी दी। मैं कल शाम को ही रंगिया जा पाऊँगा। कल सुबह सरु बाबा के साथ रंगिया चली जाना। और सुनो शादी के अगले दिन ही मुझे गुवाहाटी लौटना पड़ेगा।'

-'ठीक है – वैसा ही होगा। कमली के माँ-बाप नहीं हैं, अब तो हम ही उसका सहारा हैं। जब कमली मेरे सामने आती है, मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं पाती। कुछ भी हो - मैं उसकी जन्मदात्री माँ का स्थान तो नहीं ले सकती हूँ न'

शर्मा की पत्नी के सिसकने की आवाज मुझे स्पष्ट सुनाई दे रही है।

-'ठीक है, ठीक है, ये सब छोड़ो - कल सुबह ही तुम्हें जाना है - और एक बात है - पचास हजार रुपए में से बीस हजार का जुगाड़ अभी भी नहीं हो पा रहा है। बरबरीवाली एक कट्ठा जमीन शायद बेचना पड़ेगा। बरुवा उसे खरीदना चाहता है। कल बरुवा से ही बीस हजार एडवांस लेना पड़ेगा। बरबरीवाली जमीन हाथ से चला जाएगा।'

-'आपको जो ठीक लगे, कीजिए। मैं कुछ नहीं कहूँगी।'

-'अमृत ... ओ अमृत घर में हो ?'

–'कौन ! बड़ा बाबू !'

मेरी आवाज को अमृत ने तुरंत पहचान लिया।

-'ओह क्या भाग्य हमारा ! आइए... आइए बड़ा बाबू । अजी देखो ... बड़ा बाबू आया है।'

परदा उठा कर अमृत की पत्नी सामने आई और झुककर मुझे प्रणाम किया - मैंने भी प्रति नमस्कार किया। मैंने देखा शर्मा की पत्नी एक दुबली -पतली पर आकर्षक महिला है, उसकी दृष्टि और व्यवहार में कितना भोलापन है ! अपने पति अमृत का बिलकुल विपरीत रूप।

-'बड़ा बाबू कहाँ से आए ?'

-'कहाँ से...माने...बरबरी में एक काम था । लौटते समय तुम्हारा घर देखकर सोचा कि दो मिनिट के लिए रुक जाऊँ।'

मैं यह बताना चाहता था कि पैसे की वसूली के लिए सीधे तुम्हारा ही घर आ गया हूँ। पर बता नहीं सका।

-'बहुत अच्छा किया बड़ा बाबू !'

पत्नी की ओर देखकर कहा,

-'बड़ा बाबू के लिए चाय बनाओ । पिठा है न ?'

दोनों मुझे लेकर व्यस्त हो गए। मैं केवल अमृत तथा उसकी पत्नी के ह्रदय की विशालता को भांपने का प्रयास करता रहा । आपात दृष्टि से वे कितने साधारण व्यक्ति लगते हैं, एक-एक रुपये के लिए उन्हें अथक परिश्रम करने पड़ते हैं, ऑफिस में अमृत जैसे कर्मचारियों के कारण हम बदनाम होते हैं - पर भतीजी के प्रति उनके वास्तल्य-प्रेम और उदारता को देख मै मंत्रमुग्ध- सा हो गया । बड़े सादर के साथ मुझे चाय-पिठा परोसा गया। उसकी पत्नी ने एक पान-दान मेरे सामने रखा जिसमें एक गमछा था,

-'सर, यह गामोछा स्वीकार कीजिए । हम बहुत गरीब हैं, हमारे पास कुछ भी नहीं है। हमसे कोई भूल हो गई तो माफ़ कीजिएगा।'

मैं प्रभावित हो गया था। सोचा ये दोनों गरीब नहीं हैं - मन के बहुत बड़े धनी हैं - और हैं व्यवहारकुशल, उनका मन एक दम साफ है, विशाल ह्रदयवाले माँ-बाप हैं । मैं केवल मुस्कराया - दूसरे पानबट्टे से एक ताम्बूल उठाकर मुंह में डाला और निकल पड़ा।

संपर्क-सूत्र:

भूतपूर्व अध्यक्ष एवं सहयोगी अध्यापक

हिंदी विभाग, कॉटन कॉलेज